ToB बालमंच

मासिक जनवरी - 2026 नन्हीं कलम से.... ✍

स्थापना दिवस विशेषांक

इस अंक में पढ़ें

नींद में खर्राटा लेते हैं, क्यों ?

प्रधान सम्पादक :- रूबी कुमारी
उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

अंक- 47

सम्पादक :- त्रिपुरारि राय
म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)

प्रधान संपादक की कलम से

प्यारे बच्चों ,

टीचर्स ऑफ बिहार के सातवें स्थापना वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। हमारे प्यारे से मैगजीन का "ToB स्थापना वर्ष विशेषांक" प्रकाशित करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। किसी भी समाज का भविष्य उसके बच्चों की कल्पनाओं, विचारों और सृजनात्मकता में छिपा होता है। ToB बालमंच उसी विश्वास की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह केवल एक मैगज़ीन नहीं, बल्कि बच्चों के मन के रंगों, उनकी सोच की उड़ान और उनकी कलात्मक प्रतिभा का उत्सव है।

इस विशेषांक के माध्यम से हम उस यात्रा को याद कर रहे हैं, जिसकी शुरुआत इस उद्देश्य से हुई कि बच्चों को केवल पढ़ने वाला नहीं, बल्कि रचने वाला, सोचने वाला और अभिव्यक्त होने वाला बनाया जाए। ड्रॉइंग, पेंटिंग, शिल्प, लेखन और विविध कलाओं के ज़रिये बच्चे जो कहना चाहते हैं, यह मंच उनकी आवाज़ बनता है। इस बालमंच की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ बच्चों की कला को प्रतियोगिता नहीं, सम्मान मिलता है। हर रचना अपने आप में अनोखी है, क्योंकि वह एक बच्चे की भावना, अनुभव और कल्पना से जन्म लेती है। शिक्षकों के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से ये नन्हे कलाकार आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं।

यह स्थापना वर्ष विशेषांक उन सभी शिक्षकों को समर्पित है, जिन्होंने बच्चों की प्रतिभा को पहचाना, उन्हें मंच दिया और यह विश्वास दिलाया कि उनकी कला भी उतनी ही मूल्यवान है जितनी कोई परीक्षा की उपलब्धि। साथ ही, यह उन बच्चों को सलाम है, जिन्होंने अपने रंगों, रेखाओं और विचारों से इस मंच को जीवंत बनाया।

हमें पूरी उम्मीद है कि ToB बालमंच आगे भी बच्चों की सृजनात्मक उड़ान को नई दिशा देता रहेगा और शिक्षा को आनंद, कल्पना और अभिव्यक्ति से जोड़ता रहेगा।

पुन: ToB के सातवें वर्षगांठ की ढेर सारी शुभकामनाएं एवं बधाइयां।

रूबी कुमारी ,

प्रधान संपादक (ToB बालमंच)

उत्क्र० म० वि० सरौनी बौंसी बांका।

सम्पादकीय

प्यारे बच्चों,

खुश रहो....

जनवरी का महिना हम सबके लिए बहुत खास है, क्योंकि यह केवल एक संस्था का स्थापना वर्ष नहीं, बल्कि शिक्षा, संस्कार और उज्ज्वल भविष्य के सपनों का उत्सव है। टीचर्स ऑफ बिहार ने अपने स्थापना काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में एक नई ऊर्जा, नई सोच और नई दिशा प्रदान की है।

"ToB बालमंच" का उद्देश्य बच्चों की प्रतिभा को पहचानना, उन्हें अभिव्यक्ति का मंच देना और उनके भीतर छिपे ज्ञान, संस्कार और रचनात्मकता को निखारना है। आज के इस स्थापना वर्ष पर हम यह संकल्प लेते हैं कि हर बच्चा पढ़े, सीखे, आगे बढ़े और समाज के लिए एक प्रेरणा बने।

प्रिय विद्यार्थियों,

तुम ही देश के भविष्य हो। तुम्हारी छोटी-छोटी उपलब्धियाँ ही बड़े बदलाव की शुरुआत होती हैं। पढ़ाई केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन को समझने, सही निर्णय लेने और अच्छे इंसान बनने की कला सिखाती है। ToB बालमंच हमेशा बच्चों को प्रोत्साहित करता है कि वे प्रश्न पूछें, नई चीजें सीखें और अपने सपनों को साकार करने का साहस रखें।

टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षा के क्षेत्र में जो समर्पण और सहयोग दिखाया है, वह सराहनीय है। शिक्षकों के मार्गदर्शन से ही बच्चे सही दिशा में आगे बढ़ते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

इस स्थापना वर्ष के अवसर पर हम सभी बच्चों से यही कहना चाहते हैं कि मेहनत को अपना साथी बनाइए, अनुशासन को अपनी पहचान और ज्ञान को अपनी शक्ति।

आओ, हम सब मिलकर शिक्षा का दीप जलाएँ, अपने सपनों को ऊँचाइयों तक ले जाएँ और एक उज्ज्वल, शिक्षित एवं संस्कारित भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

"ToB बालमंच" की ओर से टीचर्स ऑफ बिहार के स्थापना वर्ष पर हार्दिक शुभकामनाएँ। तुम्हारा उज्ज्वल भविष्य ही हमारी सबसे बडी उपलब्धि है।

तुम्हारा ही,

त्रिपुरारि राय
संपादक सह ग्राफिक्स डिजाइनर
मध्य विद्यालय रौटी, महिषी (सहरसा)

सम्पादक मंडल

प्रधान संपादक	:-	रूबी कुमारी, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)
संपादक-सह- ग्राफिक्स डिजाइनर	:-	त्रिपुरारि राय, म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)
सह-संपादक	:-	ज्योति कुमारी, म.वि. भनरा, चान्दन (बाँका)
आमुख पृष्ठ सज्जा	:-	राजेश कुमार, फारबिसगंज कॉलेज (B. Ed विभाग), अररिया
सहयोगकर्ता	:-	1. मृत्युंजयम् , म.वि.नवाबगंज, समेली, (कटिहार) 2. रंजेश कुमार, प्रा. वि. छुरछुरिया, फारबिसगंज,(अररिया) 3. केशव कुमार, प्र.शि., प्रा.वि.मोहनपुर उर्दू, मुरौल, मुजफ्फरपुर 4. पूजा कुमारी, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)
संरक्षक	:-	1. शिव कुमार, संस्थापक- टीचर्स ऑफ़ बिहार 2. ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन, ToB तकनीकी टीम लीडर

-: स्थाई स्तंभ :-

1. प्रधान सम्पादक की कलम से
2. सम्पादकीय
3. आवरण कथा
4. कविता
5. कहानी
6. हँसो रे बाबू
7. बूझो तो जानें
8. वैज्ञानिक कारण
9. कहानी बनाओ प्रतियोगिता
10. अखबारों की नजर में हम
11. उभरते सितारे
12. तकनीकी कोना
13. बालमन
14. विद्यालयी क्रियाकलाप
15. क्या आप जानते हैं ?
16. अंग्रेजी सीखें
17. ड्राइंग / पेंटिंग
18. उभरते सितारे
19. फोटो ऑफ़ द मंथ
20. हिंदी ज्ञान
21. प्रमुख दिवसें
22. प्रेरक प्रसंग
23. रोचक तथ्य
24. खेल-खेल में योग
25. तुम भी बनाओ.....
26. आपकी बात आपकी जुबानी

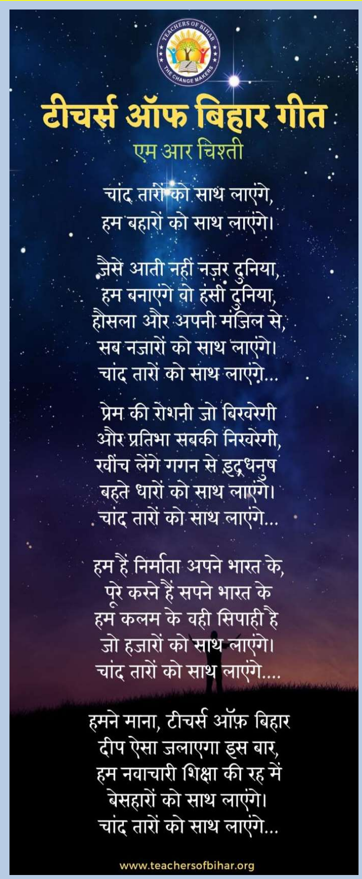

प्रेरक प्रसंग

"नई चीज़ें सीखने की आदत"

एक छोटे से गाँव में आरव नाम का एक लड़का रहता था। वह पढ़ाई में ठीक-ठाक था, लेकिन हमेशा एक ही काम करता—न नई किताब पढ़ता, न कोई नई कला सीखता।

एक दिन उसके स्कूल में नए शिक्षक आए। उन्होंने बच्चों से पूछा, "तुम रोज़ क्या नया सीखते हो?" आरव चुप हो गया, क्योंकि उसके पास कोई उत्तर नहीं था।

शिक्षक ने एक छोटा सा बीज दिखाया और कहा, "अगर यह बीज मिट्टी में पड़ा रहे और बढ़ने की कोशिश न करे, तो क्या यह पेड़ बनेगा?" बच्चों ने कहा, "नहीं!" तब शिक्षक बोले, "इंसान भी ऐसा ही है। जो रोज़ कुछ नया सीखता है, वही आगे बढ़ता है।"

उस दिन से आरव ने रोज़ एक नई चीज़ सीखने का संकल्प लिया—कभी नई कविता, कभी नई भाषा का शब्द, कभी कोई विज्ञान का प्रयोग। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ा और वह कक्षा का सबसे सक्रिय विद्यार्थी बन गया।

सीख: जो व्यक्ति जीवनभर सीखता रहता है, वही सच में आगे बढ़ता है।

संजीव कुमार
(सहायक शिक्षक)
उत्क्र० म० वि० सरौनी,बौंसी बांका।

शुभकामना सन्देश

नए वर्ष का प्रथम मास जनवरी नई आशाओं, नए संकल्पों और नए उत्साह का प्रतीक होता है। ऐसे प्रेरणादायी समय में 'बालमंच' का जनवरी अंक बच्चों की प्रतिभा, रचनात्मकता और ज्ञान-विकास का एक सुंदर माध्यम बनकर सामने आता है। यह मंच नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों को अपने विचारों, कविताओं, कहानियों और चित्रों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है, जो उनके सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

बालमंच न केवल बच्चों की कल्पनाशक्ति को पंख देता है, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, नैतिक मूल्यों और सकारात्मक सोच का भी विकास करता है। इस अंक के माध्यम से बच्चों की छुपी हुई प्रतिभाएँ निखरेंगी और उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।

मेरी ओर से 'बालमंच' से जुड़े सभी संपादकों, शिक्षकों एवं प्रिय विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आशा है कि यह अंक ज्ञान, संस्कार और सृजनशीलता का प्रकाश फैलाते हुए बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

श्री निवास कुमार,
प्रधानाध्यापक
म.वि. सुमेरी टोला, परबत्ता, खगड़िया

ToB School Activity Link......

1. Teachers Of Bihar: शिक्षा,नीति और नवाचार का संगम
• टीचर्स ऑफ बिहार के सातवें स्थापना दिवस पर सात डिजिटल प्रकाशनों का विमोचन https://www.facebook.com/share/p/1BWbhZ4Jvt/

2. https://www.facebook.com/share/v/1Hd214gx66/

3. https://www.facebook.com/share/v/1BssG9XdUk/

4. https://www.facebook.com/share/v/188fzsAZwv/

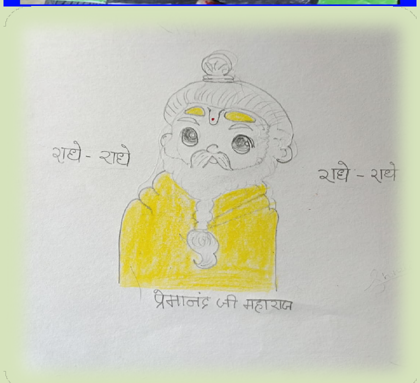

Shruti Jha, A.K.M.S.
Bhramarpur, Bhagalpur

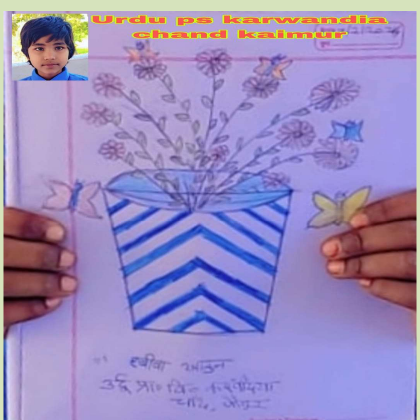

कहानी बनाओ

पागल हाथी

दिए गए चित्र को देखें और उसपर एक सुन्दर सा कहानी लिख कर हमें भेजें | उत्कृष्ट कहानी को अगले अंक में छापा जाएगा | कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम अवश्य लिखें |

बूझो तो जानें..

1. न आँखें हैं, न कान,

फिर भी रखता सबका ध्यान।

समय बताना है इसका काम,

बताओ क्या है उसका नाम?

उत्तर: घड़ी

2. ऐसी कौन सी चीज़ है जो

पानी पीते ही मर जाती है?

उत्तर: आग

हंसो रे बाबू

1. शिक्षक: बताओ, दुनिया का सबसे पुराना जानवर कौन सा है?
छात्र: ज़ेब्रा।
शिक्षक: कैसे?
छात्र: क्योंकि वह अभी तक ब्लैक एंड व्हाइट है!

2. मम्मी: इतना हँस क्यों रहे हो?
बच्चा: मैंने आज आईने को हँसा दिया!
मम्मी: कैसे?
बच्चा: मैं उसके सामने मुस्कुरा दिया!

कविता: नया दिन

नया दिन नई धूप लाया है आकाश,
हर पर में छुपा है कोई नया प्रयास
कल जो बीत गया उसे मत याद कर
आज की हवा में एक नई से बात
कर, ज्ञान का दीप जलाओ तुम,
पढ़ना लिखना काम है प्यारा,
यह है जीवन का उजियारा,
ज्ञान का दीप जलाओ तुम
किताबें हैं अपनी सच्ची दोस्त
ये सिखाती है हर एक फर्ज,
मेहनत से जो पाठ पड़ेगा,
दुनिया में वह आगे बढ़ेगा
पढ़ाई से बनती है पहचान,
यही है सबसे बड़ा वरदान,

खुशी कुमारी, वर्ग-8
उ. मध्य विद्यालय, कोठियाँ

अंग्रेजी सीखें: ADVERB

....Next to back episode

ADVERB OF DEGREE (How Much?)

Adverbs that express the importance/degree/level of the action in the sentence are called **adverbs of degree**. They answer the question 'how much is the action performed?'.

Completely, *nearly*, *entirely*, *less*, *mildly*, *most*, *thoroughly*, *somewhat*, *excessively*, *much*, etc. are common adverbs of degree.

Example:

- She <u>completely</u> forgot about her anniversary.
- I read the newspaper <u>thoroughly</u>.
- I am <u>so</u> excited about the new job.

ADVERB OF MANNER (How?)

Adverbs that express the manner/approach/process of the action in the sentence are called **adverbs of manner**. They answer the question 'how is the action performed?'.

Beautifully, *equally*, *thankfully*, *carefully*, *handily*, *quickly*, *coldly*, *hotly*, *resentfully*, *earnestly*, *nicely*, *tirelessly*, etc. are common adverbs of manner. These adverbs usually end in *ly*.

Example:

- Let's divide the prizes <u>equally</u>.
- Please, handle the camera <u>carefully</u>.
- Mike is walking <u>slowly</u>.

****

क्रियाकलाप

कोमल कुमारी, वर्ग-8, उत्क्रमित मध्य विद्यालय भैसदीरा, बरारी (कटिहार) के द्वारा तैयार माँ सरस्वती की प्रतिमा

महत्वपूर्ण दिवस

1 जनवरी – अंग्रेजी नव वर्ष दिवस
4 जनवरी – विश्व ब्रेल दिवस
6 जनवरी – विश्व युद्ध अनाथ दिवस
9 जनवरी – प्रवासी भारतीय दिवस
10 जनवरी – विश्व हिंदी दिवस
11 जनवरी – राष्ट्रीय मानव तस्करी जागरूकता दिवस
12 जनवरी – राष्ट्रीय युवा दिवस (स्वामी विवेकानंद जयंती)
15 जनवरी – भारतीय सेना दिवस
16 जनवरी – राष्ट्रीय स्टार्टअप दिवस
23 जनवरी – पराक्रम दिवस (सुभाष चंद्र बोस जयंती)
24 जनवरी – राष्ट्रीय बालिका दिवस
25 जनवरी – राष्ट्रीय मतदाता दिवस
26 जनवरी – गणतंत्र दिवस
27 जनवरी – अंतर्राष्ट्रीय प्रलय स्मरण दिवस
30 जनवरी – शहीद दिवस (महात्मा गांधी पुण्यतिथि)
31 जनवरी – अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस

वैज्ञानिक कारण

खर्राटे (Snoring) का वैज्ञानिक कारण सोते समय श्वसन मार्ग (Airway) का आंशिक रूप से संकरा या अवरुद्ध हो जाना होता है। जब हम सोते हैं, तो गले की मांसपेशियाँ ढीली हो जाती हैं और हवा का रास्ता थोड़ा संकरा हो जाता है। इस संकरे मार्ग से हवा गुजरते समय गले के ऊतकों (जैसे तालु और जीभ) में कंपन होता है, जिससे खर्राटों की आवाज़ पैदा होती है।

खर्राटे होने के मुख्य वैज्ञानिक कारण

1. गले की मांसपेशियों का ढीला होना
2. नाक बंद या साइनस की समस्या
3. मोटापा (Obesity)
4. सोने की गलत पोज़िशन (पीठ के बल सोना)
5. टॉन्सिल या एडेनॉइड का बड़ा होना
6. थकान और गहरी नींद
7. एलर्जी या सर्दी

सरल वैज्ञानिक सूत्र

संकरा वायुमार्ग + हवा का कंपन = खर्राटे की आवाज़

कब यह गंभीर हो सकता है?

यदि खर्राटों के साथ ये लक्षण हों, तो डॉक्टर से जांच करानी चाहिए

हिंदी ज्ञान: कर्ता के 'ने' चिन्ह का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है?

हिंदी व्याकरण में कर्ता के साथ 'ने' चिन्ह का प्रयोग विशेष परिस्थितियों में होता है। इसे "कर्ता कारक का 'ने' चिन्ह" कहा जाता है।

'ने' चिन्ह का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है ?

1. सकर्मक क्रिया के भूतकाल में: जब वाक्य में सकर्मक क्रिया (जिसका कर्म होता है) भूतकाल में हो, तब कर्ता के साथ 'ने' लगता है। उदाहरण: राम ने खाना खाया।

2. पूर्ण भूतकाल (Perfect Tense) में: जब काम पूरा हो चुका हो (खाया, किया, देखा आदि), तब 'ने' का प्रयोग होता है। उदाहरण: उसने फिल्म देखी।

3. संयुक्त क्रिया में: जब मुख्य क्रिया भूतकाल की हो| उदाहरण: मोहन ने काम कर लिया।

जहाँ 'ने' का प्रयोग नहीं होता है...

1. अकर्मक क्रिया के साथ: जिन क्रियाओं का कोई कर्म नहीं होता, वहाँ 'ने' नहीं लगता। उदाहरण: राम सोया। (✗राम ने सोया – गलत)

2. वर्तमान और भविष्यकाल में:

उदाहरण: मैं खाना खाता हूँ। (न कि – मैं ने खाना खाता हूँ) वह कल स्कूल जाएगा।

3. भाववाच्य / आज्ञार्थक वाक्यों में

उदाहरण: दरवाज़ा खोलो। यहाँ बैठो।

एक आसान सूत्र

भूतकाल + सकर्मक क्रिया = कर्ता के साथ 'ने'

जैसे: रीना ने आम खाया। शिक्षक ने पाठ पढ़ाया।

आओ योग सीखें.....साइनस में लाभकारी योगासन

साइनस (Sinus) की समस्या में योग बहुत लाभकारी होता है, क्योंकि यह नाक के मार्ग खोलने, सूजन कम करने और श्वास को बेहतर बनाने में मदद करता है। चूंकि आप 14 वर्ष की हैं, इसलिए हल्के और सुरक्षित योग करना सबसे अच्छा रहेगा।

साइनस में लाभकारी योगासन

1. अनुलोम-विलोम प्राणायाम: यह साइनस के लिए सबसे प्रभावी योग है।

कैसे करें: सीधा बैठें, दाएँ अंगूठे से दाहिनी नाक बंद करें, बाईं नाक से श्वास लें, फिर बाईं नाक बंद कर दाहिनी से श्वास छोड़ें, 5–10 मिनट रोज करें

लाभ: नाक की जकड़न कम करता है और सांस लेने में आसानी देता है।

2. कपालभाति (हल्के रूप में):

कैसे करें: सीधा बैठकर धीरे-धीरे तेज़ श्वास बाहर छोड़ें, पेट अंदर खींचें, शुरुआत में 30–40 बार ही करें

लाभ: साइनस में जमा बलगम साफ करने में मदद करता है। (नोट: बहुत तेज़ या ज़ोर से न करें)

3. भ्रामरी प्राणायाम

कैसे करें: आँखें बंद करें, गहरी सांस लें, "म्..." की मधुमक्खी जैसी ध्वनि निकालें, 5 बार दोहराएँ

लाभ: सिरदर्द और साइनस प्रेशर में राहत देता है।

4. भुजंगासन (Cobra Pose)

कैसे करें: पेट के बल लेटें, हथेलियाँ जमीन पर रखें, धीरे-धीरे छाती ऊपर उठाएँ, 10–15 सेकंड रुकें

लाभ: छाती और श्वसन तंत्र को मजबूत करता है।

5. सेतु बंधासन (Bridge Pose)

कैसे करें: पीठ के बल लेटें, घुटने मोड़ें, कमर को धीरे ऊपर उठाएँ, 10 सेकंड रुकें

लाभ: रक्त संचार बढ़ाकर साइनस प्रेशर कम करता है।

जरूरी सावधानियाँ: सुबह खाली पेट योग करें, बहुत ठंडी हवा में योग न करें, तेज सर्दी या बुखार में कपालभाति न करें, धीरे-धीरे अभ्यास शुरू करें

अतिरिक्त प्राकृतिक उपाय

भाप (Steam) लेना, गुनगुना पानी पीना, धूल और ठंडी चीजों से बचना, अगर साइनस के साथ बार-बार सिरदर्द, नाक बंद रहना या चेहरे में दर्द रहता है, तो डॉक्टर से जांच भी कराना चाहिए।

सफल आयोजन हेतु हृदय से आभार...

Teachers of Bihar के गरिमामय कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए हमारी पूरी टीम के प्रत्येक सदस्य को हृदय से धन्यवाद एवं साधुवाद। आप सभी के समर्पण, अनुशासन, समन्वय और अथक परिश्रम के कारण यह कार्यक्रम अत्यंत प्रभावशाली, सुव्यवस्थित और स्मरणीय बन पाया।

योजना से लेकर क्रियान्वयन तक—हर स्तर पर टीम भावना, जिम्मेदारी और सकारात्मक ऊर्जा स्पष्ट रूप से दिखाई दी। यह सफलता किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि हम सभी के सामूहिक प्रयास, विश्वास और साथ खड़े रहने की भावना का परिणाम है। आप सभी ने यह सिद्ध कर दिया कि जब उद्देश्य बड़ा हो और टीम एकजुट हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता।

आशा है कि आगे भी इसी उत्साह, प्रतिबद्धता और एकता के साथ हम Teachers of Bihar की यात्रा को और ऊँचाइयों तक ले जाएंगे।

एक बार फिर आप सभी को हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएं......।

शिव कुमार,
टीम, टीचर्स ऑफ बिहार

शिक्षा में बदलाव के 7 साल, • शिक्षा, नवाचार व शिक्षक सशक्तीकरण पर रहा जोर

टीचर्स ऑफ बिहार: स्थापना दिवस पर डिजिटल नवाचार का महाकुंभ

भास्कर न्यूज | बथनाहा (अररिया)

टीचर्स ऑफ बिहार के सात वर्षों की प्रेरणादायक यात्रा के अवसर पर स्थापना दिवस समापन उत्सव समारोह का आयोजन किया गया। यह आयोजन शिक्षा जगत में संगठन की सक्रिय भूमिका, संघर्ष और सकारात्मक बदलाव का प्रतीक बना।कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं मंच संचालन संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं शिक्षाविदों द्वारा किया गया। समारोह में ख्यातिप्राप्त शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति ने आयोजन को विशेष गरिमा प्रदान की।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. चंदन श्रीवास्तव (शैक्षिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार), श्री संजय कुमार (उप निदेशक, बिहार) तथा डॉ. उदय कुमार उज्जवल (राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद) ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मातृभाषा आधारित शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल शिक्षण संसाधनों के प्रभावी उपयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला।

स्थापना दिवस समापन समारोह के अवसर पर सात विशिष्ट अतिथियों द्वारा दो ई-बुक एवं तीन ई-पत्रिकाओं सहित एनीमेटेड वीडियो एवं कैलेंडर का का भव्य अनावरण किया गया। इन प्रकाशनों के संपादकों की भूमिका को अतिथियों ने अत्यंत

स्थापना दिवस पर 7 डिजिटल प्रकाशनों का विमोचन

डिजिटल कार्यक्रम में भाग लेते अतिथि।

पदाधिकारियों का संयुक्त बयान

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त बयान में कहा-सात वर्षों की यह यात्रा शिक्षकों के विश्वास, संघर्ष और एकजुटता की कहानी है। संगठन आने वाले समय में भी शिक्षकों के अधिकार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सकारात्मक शैक्षणिक बदलाव के लिए निरंतर कार्य

शिक्षा प्रेमियों से मिली सराहना

कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय एवं चंचला तिवारी द्वारा किया गया। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार एवं इवेंट लीडर केशव कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि यह आयोजन शिक्षक समाज को नई दिशा, ऊर्जा और डिजिटल सशक्तिकरण की प्रेरणा देने वाला सिद्ध हुआ है। कार्यक्रम का फेसबुक पेज टीचर्स ऑफ बिहार पर सीधा प्रसारण किया गया, जिसे राज्य भर के शिक्षकों एवं शिक्षा प्रेमियों से व्यापक सराहना मिली।

अतिथियों ने रखे महत्वपूर्ण विचार

समारोह में डॉ. एस. सिद्धार्थ , पूर्व अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार, प्रो. डॉ. अमरेंद्र बेहरा, संयुक्त निदेशक, नई दिल्ली, प्रो. डॉ. उषा शर्मा, प्रधान, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, प्रो. डॉ. चारु स्मिता मलिक, सहायक प्राध्यापक, नई दिल्ली सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों ने शिक्षा व्यवस्था में नवाचार, शिक्षक सशक्तिकरण, डिजिटल संसाधनों के उपयोग और समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर अपने

अखबारों के नजर में हम .....

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें Parivahan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
SCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 329, नई दिल्ली, बुधवार 28 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिंदगी में कभी भी अपने किसी भी हुनर पर घमंड मत करना, क्योंकि... पत्थर जब पानी में गिरता है तो, अपने ही वजन से डूब जाता है

03 साक्षी गोपाल: जब भगवान गवाही देने पैदल चल पड़े। | 06 भारत में धमनियों और शिराओं में रुकावट (ब्लॉकेज) के बढ़ते मामले | 08 दिल्ली पुलिस ने 'डेयर टू ड्रीम' के साथ मनाया पुनर्निर्माण का जश्न

शिक्षा, नीति और नवाचार का संगमः टीचर्स ऑफ़ बिहार के सातवें स्थापना दिवस पर सात डिजिटल प्रकाशनों का विमोचन

•शिक्षा, नवाचार और शिक्षक सशक्तिकरण पर केंद्रित रहा समापन समारोह

पटना। शिक्षकों के हित, शैक्षणिक गुणवत्ता एवं नीतिगत विमर्श को समर्पित प्रतिष्ठित संगठन "टीचर्स ऑफ बिहार" के सात वर्षों की प्रेरणादायक यात्रा के अवसर पर स्थापना दिवस समापन उत्सव समारोह का आयोजन सोमवार, 26 जनवरी 2026 को गरिमामय वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह आयोजन शिक्षा जगत में संगठन की सक्रिय भूमिका, संघर्ष और सकारात्मक बदलाव का प्रतीक बना।

गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति से बढ़ी समारोह की गरिमा....

कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं मंच संचालन संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं शिक्षाविदों द्वारा किया गया। समारोह में देश-प्रदेश के ख्यातिप्राप्त शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति ने आयोजन को विशेष गरिमा प्रदान की।

विशिष्ट अतिथियों ने रखे महत्वपूर्ण विचार....

समारोह में डॉ. एस. सिद्धार्थ (IAS), पूर्व अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार, प्रो. डॉ. अमरेंद्र बेहरा, संयुक्त निदेशक, CIET-NCERT, नई दिल्ली, प्रो. डॉ. उषा शर्मा, प्रधान, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, NCERT, प्रो. डॉ. चारु स्मिता मलिक, सहायक प्राध्यापक, NCSL-NIEPA, नई दिल्ली

सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों ने शिक्षा व्यवस्था में नवाचार, शिक्षक सशक्तिकरण, डिजिटल संसाधनों के उपयोग और समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर अपने विचार साझा किए।

शिक्षा नीति, मातृभाषा एवं डिजिटल शिक्षा पर जोर....

कार्यक्रम के दौरान डॉ. चंदन श्रीवास्तव (शैक्षिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार), श्री संजय कुमार (उप निदेशक, SCERT बिहार) तथा डॉ. उदय कुमार उज्जवल (राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद) ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मातृभाषा आधारित शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल शिक्षण संसाधनों के प्रभावी उपयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला।

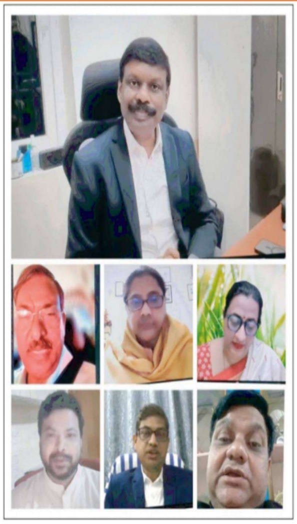

सात अतिथियों द्वारा सात डिजिटल प्रकाशनों का अनावरण....

स्थापना दिवस समापन समारोह के अवसर पर सात विशिष्ट अतिथियों द्वारा दो ई-बुक एवं तीन ई-पत्रिकाओं सहित एनीमेटेड वीडियो एवं कैलेंडर का का भव्य अनावरण किया गया। इन प्रकाशनों के संपादकों की भूमिका को अतिथियों ने अत्यंत सराहनीय बताया।

अनावृत्त प्रकाशन एवं संपादकः

कर्मणा – डॉ. मुकेश कुमार मृदुल
शिक्षक और एआई – मनीष कुमार
भावों की उड़ान – डॉ. स्वराक्षी स्वरा
प्रगाथा – सीमा संगसार
टीचर्स ऑफ बिहार कैलेंडर – पुष्पा प्रसाद एवं मो. रिजवान अहमद
स्टडी टून – रूबी कुमारी एवं मनीष कुमार
अनुसंधानम् – कीर्ति सौम्य

पदाधिकारियों का संयुक्त बयान....

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त बयान में कहा— "सात वर्षों की यह यात्रा शिक्षकों के विश्वास, संघर्ष और एकजुटता की कहानी है। संगठन आने वाले समय में भी शिक्षकों के अधिकार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सकारात्मक शैक्षणिक बदलाव के लिए निरंतर कार्य करता रहेगा।"

उन्होंने सभी अतिथियों, शिक्षकों, मीडियाकर्मियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

सोशल मीडिया पर हुआ सीधा प्रसारण....

कार्यक्रम का फेसबुक पेज 'टीचर्स ऑफ बिहार' पर सीधा प्रसारण किया गया, जिसे राज्य भर के शिक्षकों एवं शिक्षा प्रेमियों से व्यापक सराहना प्राप्त हुई।

कार्यक्रम संचालन एवं मीडिया वक्तव्य....

कार्यक्रम का संचालन मुख्य रूप से डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय एवं चंचला तिवारी द्वारा किया गया।

वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार एवं इवेंट लीडर केशव कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि— यह आयोजन शिक्षक समाज को नई दिशा, ऊर्जा और डिजिटल सशक्तिकरण की प्रेरणा देने वाला सिद्ध हुआ है।

चौथी वाणी

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

एक अखबार, पूरा हिन्दुस्तान | पटना (बिहार) से प्रकाशित

वर्ष : 05 | अंक : 28 | पटना, बुधवार, 28 जनवरी, 2026 | पृष्ठ : 12 | मूल्य : 2 रुपये | ई-मेल : chauthivani@gmail.com

महिला प्रीमियर लीग: गुजरात जायंट्स ने दिल्ली कैपिटल्स को दिया 175 रन का लक्ष्य

शिक्षा, नीति और नवाचार का संगमः टीचर्स ऑफ बिहार के सातवें स्थापना दिवस पर सात डिजिटल प्रकाशनों का विमोचन

शिक्षा, नवाचार और शिक्षक सशक्तिकरण पर केंद्रित

मोतिहारी/चौथी वाणी: शिक्षकों के हित, शैक्षणिक गुणवत्ता एवं नीतिगत विमर्श को समर्पित प्रतिष्ठित संगठन ह्यटीचर्स ऑफ बिहारह्न के सात वर्षों की प्रेरणादायक यात्रा के अवसर पर स्थापना दिवस समापन उत्सव समारोह का आयोजन सोमवार, 26 जनवरी 2026 को गरिमामय वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह आयोजन शिक्षा जगत में संगठन की सक्रिय भूमिका, संघर्ष और सकारात्मक बदलाव का प्रतीक बना।

गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति से बढ़ी समारोह की गरिमा....कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं मंच संचालन संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं शिक्षाविदों द्वारा किया गया। समारोह में देश-प्रदेश के ख्यातिप्राप्त शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति ने आयोजन को विशेष गरिमा प्रदान की।

विशिष्ट अतिथियों ने रखे महत्वपूर्ण विचार....समारोह में डॉ. एस. सिद्धार्थ (क्ष्नर), पूर्व अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार, प्रो. डॉ. अमरेंद्र बेहरा, संयुक्त निदेशक, उक्ष्एल-ठउएफ्ळ, नई दिल्ली, प्रो. डॉ. उषा शर्मा, प्रधान, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, ठउएफ्ळ, प्रो. डॉ. चारु स्मिता मलिक, सहायक प्राध्यापक, ठउरछ-ठक्एढअ, नई दिल्लीसहित अन्य विशिष्ट अतिथियों ने शिक्षा व्यवस्था में नवाचार, शिक्षक सशक्तिकरण, डिजिटल संसाधनों के उपयोग और समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर अपने विचार साझा किए।

शिक्षा नीति, मातृभाषा एवं डिजिटल शिक्षा पर जोर....कार्यक्रम के दौरान डॉ. चंदन श्रीवास्तव (शैक्षिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार), श्री संजय कुमार (उप निदेशक, रउएफ्ळ बिहार) तथा डॉ. उदय कुमार उज्जवल (राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद) ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मातृभाषा आधारित शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल शिक्षण संसाधनों के प्रभावी उपयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला।

सात अतिथियों द्वारा सात डिजिटल प्रकाशनों का अनावरण....

स्थापना दिवस समापन समारोह के अवसर पर सात विशिष्ट अतिथियों द्वारा दो ई-बुक एवं तीन ई-पत्रिकाओं सहित एनीमेटेड वीडियो एवं कैलेंडर का का भव्य अनावरण किया गया। इन प्रकाशनों के संपादकों की भूमिका को अतिथियों ने अत्यंत सराहनीय बताया।

अनावृत्त प्रकाशन एवं संपादकः कर्मणा -डॉ. मुकेश कुमार मृदुल,शिक्षक और एआई - मनीष कुमार,भावों की उड़ान - डॉ. स्वराक्षी स्वरा,प्रगाथा -सीमा संगसार

टीचर्स ऑफ बिहार कैलेंडर झ्र पुष्पा प्रसाद एवं मो. रिजवान अहमद

स्टडी टून -रूबी कुमारी एवं मनीष कुमार,अनुसंधानम् -कीर्ति सौम्य,पदाधिकारियों का संयुक्त बयान....

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त बयान में कहा—ह्यसात वर्षों की यह यात्रा शिक्षकों के विश्वास, संघर्ष और एकजुटता की कहानी है। संगठन आने वाले समय में भी शिक्षकों के अधिकार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सकारात्मक शैक्षणिक बदलाव के लिए निरंतर कार्य करता रहेगा।ह्न उन्होंने सभी अतिथियों, शिक्षकों, मीडियाकर्मियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

सोशल मीडिया पर हुआ सीधा प्रसारण....

कार्यक्रम का फेसबुक पेज ह्यटीचर्स ऑफ बिहारह्न पर सीधा प्रसारण किया गया, जिसे राज्य भर के शिक्षकों एवं शिक्षा प्रेमियों से व्यापक सराहना प्राप्त हुई।

कार्यक्रम संचालन एवं मीडिया वक्तव्य....

कार्यक्रम का संचालन मुख्य रूप से डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय एवं चंचला तिवारी द्वारा किया गया।वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार एवं इवेंट लीडर केशव कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि— यह आयोजन शिक्षक समाज को नई दिशा, ऊर्जा और डिजिटल सशक्तिकरण की प्रेरणा देने वाला सिद्ध हुआ है।

दैनिक भास्कर कटिहार 23-01-2026

साधारण परिवार की छात्रा की असाधारण प्रतिभा बनी ग्रामीण बच्चों के लिए प्रेरणा

कोमल ने मिट्टी से 4 दिन में बनाई सरस्वती प्रतिमा

भास्कर न्यूज़ | बरारी

कटिहार जिले के बरारी प्रखंड अंतर्गत वार्ड-14, भैसदीरा गांव की एक साधारण परिवार से आने वाली छात्रा ने अपनी असाधारण कला प्रतिभा से न केवल अपने गांव बल्कि पूरे क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। उत्क्रमित मध्य विद्यालय भैसदीरा की कक्षा 8 की छात्रा कोमल कुमारी ने मात्र 3 से 4 दिनों में मिट्टी से मां सरस्वती की आदमकद प्रतिमा तैयार कर यह साबित कर दिया कि प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती। ग्रामीण परिवेश में रहते हुए कोमल कुमारी की यह कलाकृति इन दिनों कला प्रेमियों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है।

मिट्टी से निर्मित यह प्रतिमा तकनीकी रूप से उत्कृष्ट होने के साथ-साथ भाव, समर्पण और सृजनशीलता की अनूठी मिसाल पेश करती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इतनी कम उम्र में इस स्तर की मूर्तिकला दुर्लभ है और यह किसी प्रशिक्षित कलाकार से कम नहीं लगती। कोमल बताती हैं कि कला के इस सफर में उन्हें अपनी माता रानी देवी का निरंतर सहयोग मिला, जो स्वयं सिलाई-कटाई कर परिवार की आर्थिक मदद करती हैं। वहीं विद्यालय के प्रधानाध्यापक वीरेंद्र सिंह ने उनकी प्रतिभा को समय रहते पहचाना और सही मार्गदर्शन देकर उनका मनोबल बढ़ाया। कोमल का कहना है कि यदि परिवार और शिक्षकों का सहयोग न

कोमल की बनाई गई सरस्वती माता की प्रतिमा।

बचपन से कला के प्रति लगाव | कोमल कुमारी

अब तक वह सैकड़ों पेंटिंग बना चुकी हैं। इसके अलावा भगवान गणेश और मां सरस्वती की कई प्रतिमाएं वह मिट्टी से तैयार कर चुकी हैं। विद्यालय परिसर में गुरू नानक देव, बिरसा मुंडा, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, चाचा नेहरू की पेंटिंग आज भी अवलोकनार्थ लगी हुई हैं।

राज्य स्तर पर भी मिल चुकी पहचान

कोमल की प्रतिभा को राज्य स्तर पर भी पहचान मिल चुकी है। टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा आयोजित 'उभरते सितारे' कार्यक्रम के तहत उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। साथ ही उनकी उपलब्धि टीचर्स ऑफ बिहार के बालमंच 'नन्ही कलम' की ऑनलाइन

प्रतिभाओं को निखारने के लिए शिक्षा विभाग लगातार प्रयासरत

इस संबंध में प्रधानाध्यापक वीरेंद्र सिंह ने बताया कि कोमल द्वारा बनाई गई मां सरस्वती की प्रतिमा की विद्यालय में विधिवत पूजा-अर्चना की जाएगी। वहीं बीडीओ धीरेंद्र कुमार धीरज ने कहा कि यह गर्व की बात है कि बरारी प्रखंड क्षेत्र में ऐसी प्रतिभाएं हैं, जिन्हें सरकारी स्तर से हरसंभव सहयोग दिया जाएगा। प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी राजकुमार सिंह ने भी भरोसा दिलाया कि ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को निखारने के लिए शिक्षा विभाग लगातार प्रयासरत है और कोमल को उचित मंच उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा।

सीमित संसाधन, असीम सपने

उल्लेखनीय है कि कोमल के पिता विजय कुमार मेहता बेंगलुरु में मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करते हैं। सीमित आर्थिक संसाधनों के बावजूद कोमल की यह सफलता यह संदेश देती है कि प्रतिभा किसी

ART BY Samina Begam
नाम -समीना बेगम,वर्ग -07,
स्कूल -रहमत नगर सदर
मुख्यालय ,पूर्णियाँ, बिहार।

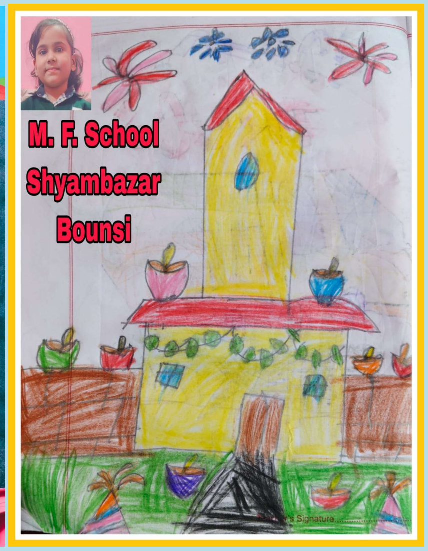
M. F. School
Shyambazar
Bounsi

PS Mahi
Siding, Sonpur

Shivani
Kumari

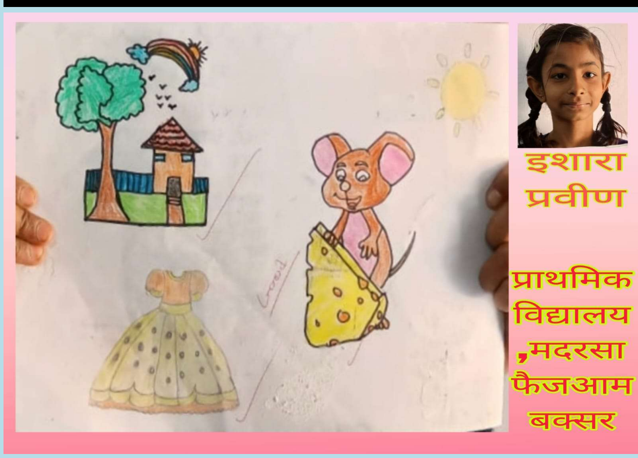
इशारा
प्रवीण
प्राथमिक
विद्यालय
,मदरसा
फैजआम
बक्सर

GPS Bathna
Mehsi,
East champaran

P. S
Bakshidih
Falka

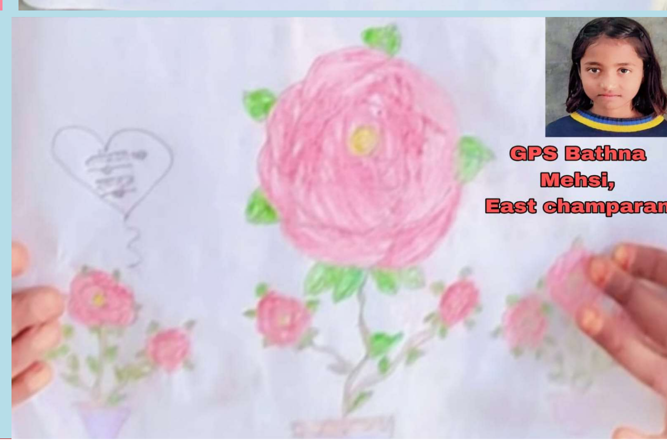
GPS Bathna
Mehsi,
East champaran

राष्ट्रीय युवा दिवस : युवा शक्ति का उत्सव

राष्ट्रीय युवा दिवस भारत में हर वर्ष 12 जनवरी को मनाया जाता है। यह दिन महान विचारक और युवा प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानन्द की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। भारत सरकार ने 1984 में इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस घोषित किया और 1985 से इसे पूरे देश में उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि युवा ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति हैं। उन्होंने युवाओं को आत्मविश्वासी, साहसी और चरित्रवान बनने का संदेश दिया। उनका प्रसिद्ध वाक्य — "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए" — आज भी युवाओं को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उनके विचारों में देशभक्ति, नैतिकता, शिक्षा और आत्मनिर्भरता का विशेष महत्व है। राष्ट्रीय युवा दिवस का उद्देश्य युवाओं को उनके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करना है। इस दिन विद्यालयों, महाविद्यालयों और विभिन्न संस्थानों में भाषण, निबंध लेखन, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से युवाओं में नेतृत्व, अनुशासन और सामाजिक सेवा की भावना विकसित होती है।

आज का युवा डिजिटल युग में जी रहा है, जहाँ अवसरों के साथ-साथ चुनौतियाँ भी अधिक हैं। इसलिए युवाओं को सकारात्मक सोच, अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य और नैतिक मूल्यों को अपनाना चाहिए। यदि युवा अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाएँ, तो वे देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

अतः राष्ट्रीय युवा दिवस हमें यह संदेश देता है कि युवा केवल देश का भविष्य ही नहीं, बल्कि वर्तमान की सबसे बड़ी ताकत हैं। हमें स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को अपनाकर एक सशक्त, शिक्षित और प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण में योगदान देना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के विचार युवाओं, शिक्षा, आत्मविश्वास और राष्ट्रनिर्माण के लिए अत्यंत प्रेरणादायक माने जाते हैं। उनके विचार आज भी जीवन में सफलता, आत्मबल और सकारात्मक सोच की राह दिखाते हैं।

स्वामी विवेकानंद के प्रमुख विचार

1. "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।"
2. "आप स्वयं पर विश्वास करें, तभी आप महान कार्य कर सकते हैं।"
3. "एक समय में एक काम करो और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमें लगा दो।"
4. "शिक्षा वह है जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े और बुद्धि का विकास हो।"
5. "सभी शक्तियाँ आपके भीतर हैं; आप कुछ भी कर सकते हैं।"
6. "डर ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।" भय को त्यागकर साहस के साथ आगे बढ़ना चाहिए।
7. "सच्ची सफलता वही है जो मानवता की सेवा से जुड़ी हो।"

स्वामी विवेकानंद के विचार युवाओं के लिए जीवन का मार्गदर्शन हैं। वे हमें आत्मविश्वासी, कर्मठ, नैतिक और देशभक्त बनने की प्रेरणा देते हैं। उनके विचारों को अपनाकर हम अपने जीवन के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

बापू के शहादत दिवस

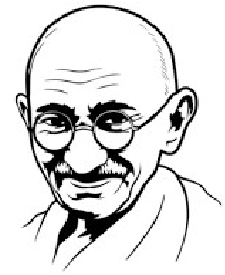

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का शहादत दिवस प्रतिवर्ष 30 जनवरी को मनाया जाता है। यह दिन हमें सत्य, अहिंसा और प्रेम के महान पुजारी बापू की याद दिलाता है। 30 जनवरी 1948 को नई दिल्ली के बिरला भवन में प्रार्थना सभा के दौरान महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई थी। इस कारण यह दिन पूरे देश में शोक और श्रद्धा के रूप में मनाया जाता है।

बापू ने असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने लोगों को सादगी, स्वदेशी और एकता का संदेश दिया। उनका जीवन अत्यंत सरल और प्रेरणादायक था। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे और समाज में प्रेम और भाईचारे की भावना फैलाने का कार्य करते थे।

शहादत दिवस हमें यह सीख देता है कि हमें बापू के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। सत्य बोलना, अहिंसा का पालन करना, दूसरों का सम्मान करना और देश के प्रति समर्पित रहना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। इस दिन विद्यालयों और संस्थानों में दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है। अंततः, बापू का जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि सत्य और अहिंसा की राह पर चलकर हम समाज और राष्ट्र को बेहतर बना सकते हैं। उनका बलिदान सदैव देशवासियों के हृदय में अमर रहेगा और आने वाली पीढ़ियों को सही मार्ग दिखाता रहेगा।

बच्चों के प्रति विचार - महात्मा गांधी के बच्चों के प्रति विचार अत्यंत प्रेमपूर्ण, सरल और प्रेरणादायक थे। वे बच्चों को राष्ट्र का भविष्य मानते थे और उनके सर्वांगीण विकास पर विशेष बल देते थे। उनके अनुसार, यदि बच्चों को अच्छे संस्कार, शिक्षा और सही वातावरण मिले, तो वे एक आदर्श समाज का निर्माण कर सकते हैं।

1. बच्चों में सत्य और अहिंसा का संस्कार: गांधी जी का मानना था कि बच्चों को बचपन से ही सत्य बोलना, ईमानदार रहना और अहिंसा का पालन करना सिखाया जाना चाहिए। उनका विश्वास था कि यही गुण आगे चलकर एक अच्छे नागरिक का निर्माण करते हैं।

2. शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण: गांधी जी ने शिक्षा को केवल किताबों तक सीमित नहीं माना। वे कहते थे कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों के चरित्र, नैतिक मूल्यों और व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए। उन्होंने "नैतिक शिक्षा" और "कर्म आधारित शिक्षा" (बुनियादी शिक्षा) पर जोर दिया।

3. सादगी और आत्मनिर्भरता: वे चाहते थे कि बच्चे सादा जीवन जीना सीखें, अपने कार्य स्वयं करें और आत्मनिर्भर बनें। उनके अनुसार, आत्मनिर्भरता बच्चों में आत्मविश्वास और जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है।

4. प्रेम और अनुशासन का संतुलन: गांधी जी बच्चों के साथ कठोरता के बजाय प्रेम और समझदारी से व्यवहार करने के पक्षधर थे। वे मानते थे कि बच्चों को डाँटने से अधिक उन्हें समझाना और मार्गदर्शन करना आवश्यक है।

5. खेल और श्रम का महत्व: उनका विचार था कि बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए खेल, श्रम और रचनात्मक गतिविधियाँ अत्यंत आवश्यक हैं। वे पढ़ाई के साथ-साथ खेल और कार्य को भी समान महत्व देते थे।

6. समानता और मानवता की भावना: गांधी जी चाहते थे कि बच्चों में जाति, धर्म और भेदभाव से ऊपर उठकर मानवता, सहयोग और भाईचारे की भावना विकसित हो।

गांधी जी के अनुसार बच्चे कोमल पौधों की तरह होते हैं। यदि उन्हें सही मार्गदर्शन, अच्छे संस्कार और प्रेमपूर्ण वातावरण मिले, तो वे एक उज्ज्वल और नैतिक समाज का निर्माण कर सकते हैं। उनके विचार आज भी बच्चों के चरित्र निर्माण और बेहतर भविष्य के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

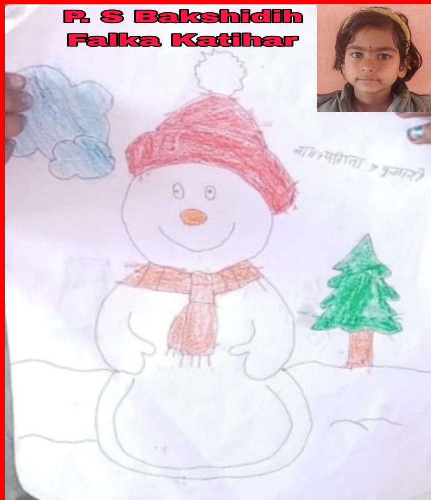
P. S Bakshidih
Falka Katihar

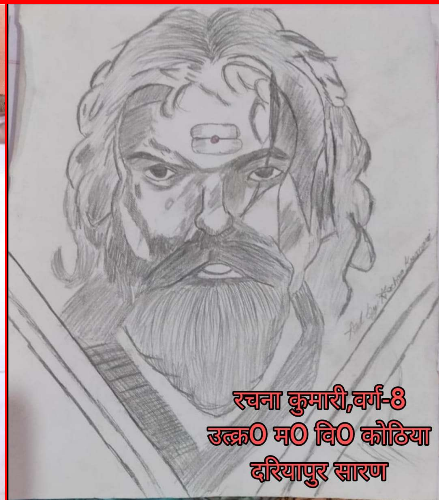
रचना कुमारी,वर्ग-8
उत्क्र0 म0 वि0 कोठिया
दरियापुर सारण

साम्भवी
कुमारी
क्लास-06
स्कूल -म०वि०
रहमत नगर
सदर
मुख्यालय
पूर्णियाँ
बिहार।

P. S
Bakshidih
Falka,
Katihar

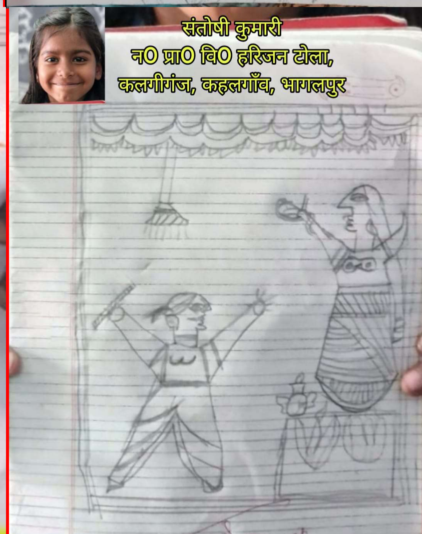
संतोषी कुमारी
न0 प्रा0 वि0 हरिजन टोला,
कलगीगंज, कहलगाँव, भागलपुर

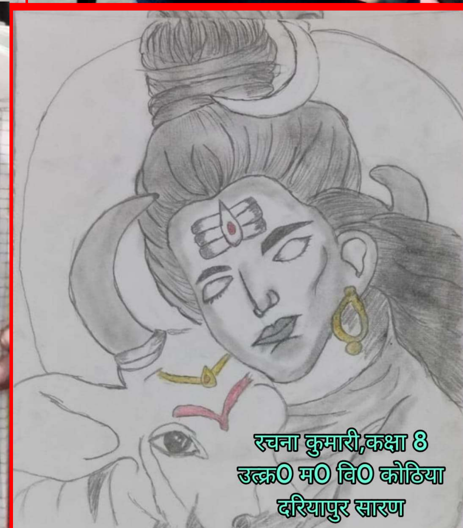
रचना कुमारी,कक्षा 8
उत्क्र0 म0 वि0 कोठिया
दरियापुर सारण

इशारा प्रवीण
प्राथमिक विद्यालय ,मदरसा
फैजआम बक्सर
पढ़ेगी बेटी तभी तो बढ़ेगी बेटी

GPS Bathna
Mehsi,
East champaran

शब्बा प्रवीण
प्राथमिक विद्यालय ,मदरसा
फैजआम बक्सर
SAVE
GIRL CHILD
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

GPS Bathna
Mehsi
East
champaran

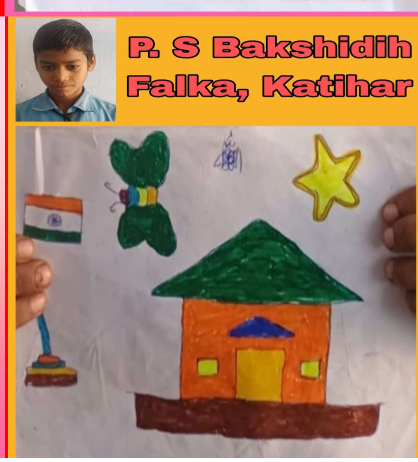
P. S Bakshidih
Falka, Katihar

GPS Bathna
Mehsi,
East champaran

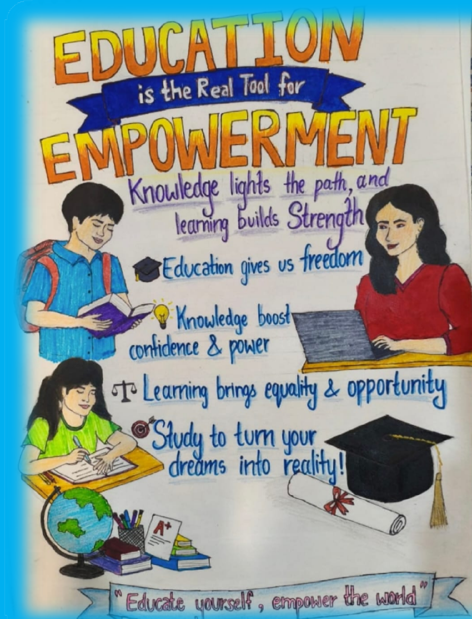

प्रभजोत सोडी, वर्ग-8, उत्क्रमित मध्य विद्यालय भैसदीरा, बरारी (कटिहार)

GPS Bathna Mehsi, East champaran

P. S Bakshidih Falka, Katihar

यह पत्रिका आपको कैसी लगी हमें whatsapp के माध्यम से बताएं | हम आपके विचारों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे |

पत्रिका के अगला अंक नववर्ष विशेषांक के लिए भी अपनी रचनाएं हमें भजें |

हमारा whatsapp नम्बर है 8877318781 (Tripurari Roy)

उभरते सितारे

जिनको भी प्रशस्ति-पत्र मिल रहा है उनका लिस्ट इस लिंक पर उपलब्ध है:-
https://www.teachersofbihar.org/award

Date: 01 Feb,2026
Cert. No.: 19f27625-3e94-435c-a878-5a3fdd39639e

ToB उभरते सितारे

बालमंच
नन्हीं कलम से ....

प्रशस्ति पत्र

RimshaKumari

UMS KOTHIYA, Dariyapur, Saran,
को टीचर्स ऑफ बिहार के 'बालमंच- नन्हीं कलम से' ऑनलाइन ई-मैग्जीन में उनके सहयोग, समर्पण एवं PAINTING,...............' के लिए 'ToB उभरते सितारे' के रूप में चयनित किया जाता है।
भविष्य के लिए असीम शुभकामनायें।

रूबी कुमारी | त्रिपुरारि राय | शिव कुमार